चूडा पधारे। सं० २००८ जेठ बदि ७ को दादा जिनदत्तसूरि मूर्ति, मणिधारी जिनचंद्रसूरि व जिनकुशलसूरि एवं पं० केशरमुनिजी की पादुकाऐं प्रतिष्ठित की। वहां से आहोर, जालोर होते हुए गढ़सिवाणा आकर चातुर्मास किया। फिर नाकोड़ाजी पधार कर मार्गशिर सुदि १ को दादासाहब जिनदत्तसूरि मूर्ति व श्रीकीर्तिरत्नसूरिजी की जीर्णोद्धारित देहरी में प्रतिष्ठा करवाई। नाकोड़ाजी से विहार कर सूरिजी डीसा कैंप भीलड़ियाजी होते हुए राधनपुर, कटारिया, अंजार होते हुए भद्रेश्वर तीर्थ पहुँचे।

भद्रेश्वरजी की यात्रा कर मांडवी होते हुए भुज पधारे, संघ का चिरमनोरथ पूर्ण हुआ। यहाँ दादाबाड़ी निर्माण का लम्बा इतिहास है पर इसकी चेष्टा करने वाले हेमचन्द भाई जिस दिन स्वर्गवासी हुए उसी दिन आपने स्वप्न में पुरानी और नई दादावाड़ी आदि सहित उत्सव को व हेमचंद भाई आदि को देखा वही दृश्य भुज की दादावाड़ी प्रतिष्ठा के समय साक्षात् हो गया। सं० २००९ माघ सुदि ११ को बड़े समारोह पूर्वक प्रतिष्ठा हुई। सूरत से सेठ बालूभाई विधि-विधान के लिये आये। जिनदत्तसूरि की प्रतिमा व मणिधारी जिनचन्द्रसूरि व श्रीजिनकुशलसूरि के चरणों की प्रतिष्ठा बड़े धूमधाम से हुई।

सं० २०१० का चातुर्मास सूरिजी ने मांडवी किया। मि० व० २ को धर्मनाथ जिनालय पर ध्वजदंड चढ़ाया गया, उत्सव हुए। मोटा आसंबिया में मंदिर का शताब्दी महोत्सव हुआ। भुज की दादाबाड़ी में हेमचंद भाई की ओर से नवीन जिनालय निर्माण हेतु सं० २०११ वै० शु० १२ को सूरिजी के कर-कमलों से खात मुहूर्त्त हुआ। तदनंतर सूरिजी ने अंजार चातुर्मास किया।

चातुर्मास के पश्चात् भद्रेश्वर यात्रा कर मांडवी पधारे। वहां की विशाल रमणीय दादावाड़ी में दादा जिनदत्तसूरि प्रतिमा विराजमान करने का उपदेश दिया, पटेल वीकमसी राघवजी ने इस कार्य को सम्पन्न करने की अपनी भावना व्यक्त की। सूरिजी का शरीर स्वस्थ था, आंख का मोतियबिंद उतरता था जिसका इलाज कराना था पर माघ वदी ८ को अर्द्धांङ्ग व्याधि हो गयी और माघ सुदि १ के दिन समाधिपूर्वक स्वर्गवासी हुए। आपने अपने जीवन में शुद्ध चरित्र पालन करते हुए, शासन और गच्छ की खूब प्रभावना की थी।

●

विद्वद्वर्य उपाध्याय श्रीलब्धिमुनिजी

[भँवरलाल नाहटा]

बीसवीं शताब्दी के महापुरुषों में खरतरगच्छ विभूषण श्री मोहनलालजी महाराज का स्थान सर्वोपरि है। वे बड़े प्रतापी, क्रियापात्र, त्यागी-तपस्वी और वचनसिद्ध योगी पुरुष थे। उनमें गच्छ कदाग्रह न होकर संयम साधन और समभावी श्रमणत्व सुविशेष था। उनका शिष्य समुदाय भी खरतर और तपा दोनों गच्छों की शोभा बढ़ाने वाला है। उ० श्रीलब्धिमुनिजी महाराज ने आपके वचनामृत से संसार से विरक्त होकर संयम स्वीकार किया था।

श्रीलब्धिमुनिजी का जन्म कच्छ के मोटी खाखर गाँव में हुआ था। आपके पिता दनाभाई देढिया वीसा ओसवाल थे। सं० १९१५ में जन्म लेकर धार्मिक संस्कार युक्त माता-पिता की छत्र-छाया में बड़े हुए। आपका नाम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लधाभाई था। आपसे छोटे भाई नानजी और रतनबाई नामक बहिन थी। सं० १९५८ में पिताजी के साथ बम्बई जाकर लधाभाई, मायखला में सेठ रतनसी की दुकान में काम करने लगे। यहाँ से थोड़ी दूर पर सेठ भीमसी करमसी की दुकान थी, उनके ज्येष्ठ पुत्र देवजी भाई के साथ आपकी घनिष्ठता हो गई क्योंकि वे भी धार्मिक संस्कार वाले व्यक्ति थे। सं० १९५८ में प्लेग की बीमारी फैली जिसमें सेठ रतनसी भाई चल बसे। उनका स्वस्थ शरीर देखते-देखते चला गया, यही घटना संसार की क्षणभंगुरता बताने के लिये आपके संस्कारी मनको पर्याप्त थी। मित्र देवजी भाई से बात हुई, वे भी संसार से विरक्त थे। संयोगवश उस वर्ष परमपूज्य श्रीमोहनलालजी महाराज का बम्बई में चातुर्मास था। दोनों मित्रों ने उनकी अमृत-वाणी से वैराग्य-वासित होकर दीक्षा देने की प्रार्थना की।

पूज्यश्री ने मुमुक्षु चिमनाजी के साथ आपको अपने विद्वान शिष्य श्रीराजमुनिजी के पास आबू के निकटवर्ती मंढार गांव में भेजा। राजमुनिजो ने दोनों मित्रों को सं० १९५८ चैत्रवदि ३ को शुभमुहूर्त्त में दीक्षा दी। श्रीदेवजी भाई रत्नमुनि (आचार्य श्रीजिनरत्नसूरि) और लधा भाई लब्धिमुनि बने। प्रथम चातुर्मास में पंच प्रतिक्रमणादि का अभ्यास पूर्ण हो गया। सं० १९६० वैशाख सुदि १० को पन्यास श्रीयशोमुनिजी (आ० जिनयशःसूरिजी) के पास आप दोनों की बड़ी दीक्षा हुई। तदनन्तर सं० १९७२ तक राजस्थान, सौराष्ट्र, गुजरात और मालवा में गुरुवर्य श्रीराज-मुनिजी के साथ विचरे। उनके स्वर्गवासी हो जाने से डग में चातुर्मास करके सं० १९७४-७५ के चातुर्मास बम्बई और सूरत में पं० श्रीऋद्धिमुनिजी और कान्तिमुनिजी के साथ किये। तदनन्तर कच्छ पधार कर सं० १९७६-७७ के चातुर्मास भुज व माँडवी में अपने गुरु-भ्राता श्रीरत्नमुनिजी के साथ किये। सं० १९७८ में उन्हीं के साथ सूरत चौमासा कर १९७९ से ८५ तक राजस्थान व मालवा में केशरमुनिजी व रत्नमुनिजी के साथ विचर कर चार वर्ष बम्बई विराजे। सं० १९८९ का चौमासा जामनगर करके फिर कच्छ पधारे। मेराऊ, माँडवी, अंजार, मोटी खाखर, मोटा आसंबिया में क्रमशः चातुर्मास करके पालीताना और अहमदाबाद में दो चातुर्मास व बम्बई, घाटकोपर में दो चातुर्मास किये। सं० १९९९ में सूरत चातुर्मास करके फिर मालवा पधारे। महीदपुर, उज्जैन, रतलाम में चातुर्मास कर सं० २००४ में कोटा, फिर जयपुर, अजमेर, व्यावर और गढ़ सिवाणा में सं० २००८ का चातुर्मास बिता कर कच्छ पधारे। सं० २००९ में भुज चातुर्मास कर श्रीजिनरत्नसूरिजी के साथ ही दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा की। फिर मांडवी, अंजार, मोटा आसंबिया, भुज आदि में विचरते रहे। सं० १९७६ से २०११ तक जबतक श्रीजिनरत्नसूरिजी विद्यमान थे, अधिकांश उन्हीं के साथ विचरे, केवल दस बारह चौमासे अलग किये थे। उनके स्वर्गवास के पश्चात् भी आप वृद्धावस्था में कच्छ देश के विभिन्न क्षेत्रों को पावन करते रहे।

आप बड़े विद्वान, गंभीर और अप्रमत्त विहारी थे। विद्यादान का गुण तो आप में बहुत ही श्लाघनीय था। काव्य, कोश, न्याय, अलंकार, व्याकरण और जैनागमों के दिग्गज विद्वान होने पर भी सरल और निरहंकार रह कर न केवल अपने शिष्यों को ही उन्होंने अध्ययन कराया अपितु जो भी आया उसे खूब विद्यादान दिया। श्रीजिन-रत्नसूरिजी के शिष्य अध्यात्मयोगी सन्त प्रवर श्रीभद्रमुनि (सहजानंदघन) जी महाराज के आप ही विद्यागुरु थे। उन्होंने विद्यागुरु की एक संस्कृत व छः स्तुतियाँ भाषा में निर्माण की जो लब्धि-जीवन प्रकाश में प्रकाशित हैं।

उपाध्यायजी महाराज अपना अधिक समय जाप में तो बिताते ही थे पर संस्कृत काव्यरचना में आप बड़े सिद्ध-हस्त थे। सरल भाषा में काव्य रचना करके साधारण व्यक्ति भी आसानीसे समझ सके इसका ध्यान रख कर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्लिष्ट शब्दों द्वारा विद्वत्ता प्रदर्शन से दूर रहे। आप संस्कृत भाषा के प्रखर विद्वान और आशुकवि थे। सं० १९७० में खरतरगच्छ पट्टावली की रचना आपने १७४५ श्लोकों में की। सं० १९७२ में कल्पसूत्रटीका रची। नवपद स्तुति, दादासाहब के स्तोत्र, दीक्षाविधि, योगोद्वहन विधि आदि की रचना आपने १९७७-७९ में की। सं० १९९० में श्रीपालचरित्र रचा।

सं० १९९२ में हमारा युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि ग्रन्थ प्रकाशित होते ही तदनुसार १२१२ श्लोक और छः सर्गों में संस्कृत काव्य रच डाला। सं० १९८० में आपने जेसलमेर चातुर्मास में वहाँ के ज्ञानभंडार से कितने ही प्राचीन ग्रन्थों की प्रतिलिपियां की थीं। सं० १९९६ में ६३३ पद्यों में श्रीजिनकुशलसूरि चरित्र, सं० १९९८ में २०१ श्लोकों में मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि चरित्र एवं सं० २००५ में ४६८ श्लोकमय श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र काव्य की रचना की।

सं० २०११ में श्री जिनरत्नसूरि चरित्र, सं० २०१२ में श्रीजिनयशःसूरि चरित्र, सं० २०१४ में श्रीजिनऋद्धि सूरि चरित्र, सं० २०१५ में श्री मोहनलालजी महाराज का जीवन चरित्र श्लोकबद्ध लिखा। इस प्रकार आपने नौ ऐतिहासिक काव्यों के रचने का अभूतपूर्व कार्य किया। इनके अतिरिक्त आपने सं० २००१ में आत्म-भावना, सं० २००५ में द्वादश पर्व कथा, चैत्यवन्दन चौबीसी, बीस स्थानक चैत्यवन्दन, स्तुतियाँ और पांचपर्व-स्तुतियों की भी रचना की। सं० २००७ में संस्कृत श्लोकबद्ध सुसढ चरित्र का निर्माण व २००८ में सिद्धाचलजी के १०८ खमासमण भी श्लोकबद्ध बनाये।

आपने जैनमन्दिरों, दादावाड़ियों और गुरु चरण-मूर्त्तियों की अनेक स्थानों में प्रतिष्ठाएं करवायी। आपके उपदेश से अनेक मन्दिरों का नवनिर्माण व जीर्णोद्धार हुआ। सं० १९७३ में पणासली में जिनालय की प्रतिष्ठा कराई। सं० २०१३ में कच्छ मांडवी की दादावाड़ी का माघबदि २ के दिन शिलारोपण कराया। सं० २०१४ में निर्माण कार्य सम्पन्न होने पर श्रीजिनदत्तसूरि मन्दिर की प्रतिष्ठा करवायी और धर्मनाथ स्वामी के मन्दिर के पास खरतर गच्छोपाश्रय में श्रीजिनरत्नसूरिजी की मूर्त्ति प्रतिष्ठित करवायी। सं० २०१६ में कच्छ-भुज की दादावाड़ी में सं० हेमचन्द भाई के बनवाये हुए जिनालय में संभवनाथ भगवान आदि जिनबिम्बों की अञ्जनशलाका करवायी। और भी अनेक स्थानों में गुरुमहाराज और श्रीजिनरत्नसूरि जी के साथ प्रतिष्ठादि शासनोन्नायक कार्यों में बराबर भाग लेते रहे।

ढाई हजार वर्ष प्राचीन कच्छ देश के सुप्रसिद्ध भद्रेश्वर तीर्थ में आपके उपदेश से श्रीजिनदत्तसूरिजी आदि गुरुदेवों का भव्य गुरु मन्दिर निर्मित हुआ। जिसकी प्रतिष्ठा आपके स्वर्गवास के पश्चात् बड़े समारोह पूर्वक गणिवर्य श्रीप्रेम-मुनिजी व श्रीजयानन्दमुनिजी के करकमलों से सं० २०२६ वैशाख सुदि १० को सम्पन्न हुई।

उपाध्याय श्रीलब्धिमुनिजी महाराज बाल-ब्रह्मचारी, उदारचेता, निरभिमानी, शान्त-दान्त और सरलप्रकृति के दिग्गज विद्वान थे। वे ६५ वर्ष पर्यन्त उत्कृष्ट संयम साधना करके ८८ वर्ष की आयु में सं० २०२३ में कच्छ के मोटा आसंबिया गाँव में स्वर्ग सिधारे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org